My Heart

My parents are my heart
Feel me life
Want fly in the sky like a bird
To look you in this world.
God does not like me
They gave me one by one
Everything at sometime
I liked this life
But he made me weep
Every morning and evening
He cared me not
I did not go sleep
He wants to kill me
But by bless of luck
My life is safe.
I have fasted you
Though I have a sock.
My choice is nice
To spread me wide
In north and east
In south and west
I want to show myself
As a preacher and
A writer or poetern
Who wrote about ownself
Though famous me not I am.
But famous is story of mine
My parents inspired me always
They made me fit-and-fine
My parents are my heart
Who give a life of art.

When I will see you

I’ll see you tomorrow
You want to know my name
I played a game with you
You want to play with me
I am not unhappy and sad
We have gone together
She did not feel any sad
When my story is known by mother
You may laugh at me
When I will weep with tears
You will laugh at me
When I’ll unable to hear
I will not face any other
My people or my brother
I know all men and women
Will have a laugh at me
Everyone would feel a joy
When sorrow will come in my lips
I will see you then
When all would tell my story
I will not have a weep
When I will live in your memory
I will see you tomorrow
When you will want to know me.

फरियाद

कैसी है ये रीत संसार की
कीमत ही नहीं जिसमें आँसूओं के फुहार की
रिमझिम घटाएँ तो रोज ही बरसा करती थी
पर कहाँ कभी ये किसी को तृप्त करती थी
कैसा छाया था आँखों पे ये कोहरा घना
हस्ती ही बन के रह गया जिसमें धुआँ
क्या खेल इसी को कहते हैं तकदीर का
कैसा रूख बदला जिन्दगी ने अपनी ही तस्वीर का
कभी-कभी सोचकर हैरान रह जाती हूँ
कभी आँखों से एक इल्तजा भी करती हूँ
बूझा ही रहना है तुमको सदा
कहाँ किसको गम ही है तेरा
कितनी कशिश थी उन आँखों में
रातों को जिसे देखा करती थी मैं कभी
अब तो अजनबी ही बन के रह गए सभी
सब अपने हुए पराये
कौन अब हमें अपनाए
ऐ मिट्टी तु ही अब कफन ओढ़ा दे
गहरी नीन्द मुझे अब तो सुला दे
तड़प के तो जाने कई-कई बार मरी मैं
पर तन के साथ कहाँ कभी एक बार गयी मैं
कैसा लगता है उन लम्हों को याद कर
लेकिन अब क्या करना उनसे फरियाद कर
लूटी तो हस्ती पहले से ही थी
अब नया क्या ऐसा कुछ हुआ
लोगों की नजर में तो एक तमाशा थी ही मैं
तो क्या हुआ जो आज फिर से
वही धोखा हुआ।
यही तकदीर थी मेरी जिसपे हैरान क्या होना था अब

क्यों तमाशायी जीवन ही ये हमको मिला
काँटों से तो पहले ही था दामन छिला
ये नया घाव तो एक मुबारकबाद दे के गया
देनेवालों ने तो कुछ भी न कहा
पर हमने जाने कितनी दफा
हँस-हँसके है यह दु:ख सहा
अब तो ये तन एक बोझ सा लगता है
क्या कभी ये मिट भी सकता है
क्यों करूँ ऐसा इंतजार मैं
नफरत की तो बनी फिर से शिकार मैं
कैसी थी ये हालत मेरी उस वक्त की
जम गया था पानी की तरह जहाँ एक-एक रक्त का
क्या मिला तुझे ये आसमाँ
हमारी हस्ती बरबाद करके
मैनें तो मौत ही माँगी थी फकत
तुझसे एक फरियाद करके
क्या यही मौत का किस्सा होता है
कि लाश ही कफन के रोता है
कैसी है ये चीख हवाओं में
क्या सुना नहीं शोर तुने इन फिजाओं में
ये मेरा तन बदनाम कर गया
मेरी निगाहों से आज सागर भी गुजर गया
कब कैसे बहाये कोई इसमें लाश हमारी
कर्ज में तो डूब गयी ये धरती सारी
न लिया किसी से कुछ कभी
न ले सकूँगी
जो भी मुझको दिया वो भी
एक कर्ज तुम्हारे पास रहा
जिस दिन चुकाने की बारी आएगी
चुका न सकोगे
तुम तो हर पल, हर लम्हा ही हमपे हँसोगे

पर मुबारक की ये चीज तो मुझे हर बार मिली
कभी फूल नहीं मिले न ही कभी बहार मिली
थोड़ा और बदनाम होना था
ये रोना भी क्या रोना था
हर हाल में तो यही होना था
फिर मातम कैसा ऐसे गमों का
किससे पुछुँ हिसाब इन जख्मों का
घाव तो पहले भी थे मिले
ये तुम जो आज लग गये गले
इसमें नया क्या हुआ
जो भी हुआ, अच्छा ही हुआ
ये किस्सा तो मशहुर है मेरा
कोई नहीं मेरा, कोई नहीं मेरा
फिर किसी को अपना बनाना
ही तो भुल बन गयी
आँसुओं की कली आज देखो
खिलके फूल बन गयी
अब मातम कैसा
कैसा रोना, हमें तो शर्म का आता ही नहीं है लाज निभाना
अब जो लाज गयी
ये क्या खाक गयी
लज्जा का गहना था ही कब हमारे पास
ये तो रिश्ते धोखे ही लगते थे सारे
फिर कैसे रोऊँ मैं इन लाशों और कफन पे
यही दमन तो हर बार हुआ है मेरे साथ
जागी है हमने तन्हा ही हर रात
कभी जब मौत मिलेगी
तो तुम्हें खबर जरूर करूँगी
तुम याद रखना एक दिन मैं जरूर मरूँगी।
तुम्हें क्या लगता है पागल हूँ मैं?
नहीं रे! घटा भरा एक बादल हूँ मैं।

चाहो तो बरस के दिखा दूँ
अपने पलकों के बीच मैं इसे सजा दूँ
पर तुम्हें दिखा के करना भी है अब क्या
जब कोई न हुआ मेरा तो तुम क्यों होते
हमारे लिए जब कोई न रोया
तो तुम क्यों रोते
यही तो हालत हर बार थी मेरी
इससे ज्यादा और क्या तकदीर थी मेरी
अब तो अपने से ही मैं शर्मीन्दा हूँ
जाने कैसे इस शर्म के बीच भी
मैं जिन्दा हूँ
पर मौत मिले ही नहीं तो मैं क्या करूँ
बोलो तुम्हीं ऐ जमीं मैं कैसे मरूँ
मेरा अन्त जब होना ही नहीं
तो कैसे मैं अपने मरने का इन्तजार करूँ
क्या किस्सा ये अपना और लिखूँ
लिखूँ तो किसके बारे में यार लिखूँ
कौन है मेरा जिसका कि अब इन्तजार करूँ
क्यों आसूँ को भी मैं रोकर शर्मशार करूँ
कैसे मैं जिन्दगी किसी पे निसार करूँ
मेरे तो आसूँ ही मन के मीत हैं
यही तो मेरे साथी, इन्हीं से तो मुझे प्रीत है
कैसे इनसे फिर बचती मैं
कहाँ मेंहदी बना कभी हथेली पे रचती मैं
ये तो खेल सितम का नहीं था
ये तो खेल उस सितमसार का नहीं था
दोष तो सारा हमारा था
न दोष अब किसी और का दूँगी
जो भी दोगी ऐ जमीं, हँसकर तुमसे मैं लूँगी
यही मेरी जिन्दगी में तो हर बार हुआ
तो क्यों कहूँ मैं इसे फिर कि
ये बेकार हुआ!

कभी तो ठहर के देखा ही नहीं था
कहाँ कभी ऐसी शर्म की याद आयी थी हमें
कभी कहाँ किसी वक्त लज्जा की
प्रीत निभायी थी हमने
अब कैसा रोना फिर जिन्दगी
ये दर्द तो नया नहीं था किसी का
जो मिला हर बार ही मिला
हमने ही जाने धोखे को था स्नेह माना
कैसे जीऊँ मैं अपनी लाश को साथ लिए
कभी सोच के देखा तो
यहीं फिर रो लिए
अब तो डर लगता है अपने ही आप से
कब मुक्त होऊँगी मैं इस जिन्दगी के फाँस से
ऐ धरती अब तो तु बोझ ये उतार दे
एक बार तो मुझे फुलों का हार दे
जी चाहे तो आज ही बस दुत्कार दे
अब क्या करूँ मैं अपनी ऐसी हस्ती का
लूटती देखी हमने हर जगह
हालात अपनी बस्ती का
सोच-सोचकर हैरान हूँ मैं
कौन हूँ मैं और क्या हूँ मैं
कैसे आ गयी मैं इस धरती पर
किसका कर्ज बाकी रहा
आज भी हमारे ऊपर
कोई हमें दीवाना क्यों कहे
हम तो हर बार यहीं सोच के मरे
न मैं आवारा हूँ, न मैं प्यासी घटा
अब तो तुम्हीं दो हमको बता
कैसे चल रही है ये सांस मेरी
अब कैसे जीऊँ मैं इस तरह की जिन्दगी
क्यों सहूँ मैं ऐसी शर्मिन्दगी

लोग हँसते हैं मुझपे
पर कभी मैं ना हँसी किसी पे
कैसे उठाऊँ ऐसे तन का बोझ
जबकि मरती तो हूँ मैं कई-कई बार हर रोज
फिर क्यों अपनी ही लाश को
अपने ही काँधे पे बिठाये फिर रही हूँ मैं
क्यों बार-बार मर-मर के भी
जी ही रही हूँ मैं
कभी तो अफसोस जाहिर कर ऐ धरती
मेरी लाश पर
बता क्या करूँ मैं?
कैसे बिताऊँ मैं बर्बाद जिन्दगी के ये क्षण
तड़पता रहता है यही सोच-सोचकर
हर बार ये मेरा मन
क्यों ऐसी किस्मत है मेरी
जबकि तेरे ही कदमों में जन्नत है सबकी
क्यों एक मैं ही हूँ ऐसी हस्ती
जिसका कि कोई अन्त ही नहीं
क्या कभी मैं नहीं मरूँगी
क्या हमेशा मैं ऐसे ही
दुख की आग में जलती रहूँगी
क्या मेरे ही आसुँओं से
होता है तेरे मन में उजाला
ये कैसा वक्त है आया
हर तरफ तन है मैला, मन है मैला
कैसा लगता है ये सोचकर
हैरान होती हूँ मैं अपने ही आप पर
मैं क्या करूँ कैसे जीऊँ
अगर मरूँ तो कब और कैसे मरूँ
कहाँ पर दफन होगी यह लाश मेरी
कौन सी जगह होगी दामन में तेरी।

कभी जब याद आऊँ तो सोच लेना
एक बार ही सही मेरी हालत पे तो रो लेना
कभी याद आए हमारी तो
सोव लेना वो बातें मेंरी
जिसमें थी जाने कितनी सच्चाई
पर कौन यकीन करेगा अब मेरा
जब आसमां ही रूठ गया
और कोई कफन छीन ले गया
अब मेरे पास ऐ धरती
तेरा कोई हक और बाकी रहा
अब तो एक ही आरजू है मेरी
हमेशा रहूँ दूर नजरों से तेरी
अब न देखोगे कभी मेरी सूरत
मैं हूँ नहीं एक प्यारी मूरत
मैं तो पाप हूँ इस धरती पर
मेरा क्यों कोई ऐतबार करे
कौन फिर मेरे लिए आसूँ अपना बरबाद करे
यही तो हालत मेरी हर बार हुई
मैं हर कदम पर शर्मसार हुई
अब तो धैर्य धारण करना छोड़ दिया हमने
क्या धारणा बनायी है हम क्या जाने
हमारे बारे में तुमने
कभी जब याद आऊँ तो जरूर सोचना
चाहो तो मेरी हालत पे हँस ही लेना
अब क्या रहा मेरे पास
न शर्म बची न हया
कभी मैं तो तेरी ही हालत पे हर बार हँसी
कैसी थी जाने वो मनहूस घड़ी
कैसा था जाने वो नातों-रिश्तों का बबंडर
जिसमें छुपा था आँसूओं का समन्दर
अब तो अपने ही आप पे शर्मिन्दा हूँ

जो भी हो अभी तक मैं जिन्दा हूँ
दो गज कफन मुझे ओढ़ा देना
एक यही आरजू है तुम सबों से
कभी जब मेरे कारनामों पर हैरान होना
तो रोना नहीं, अपने आँसूओं को बर्बाद मत करना
क्योंकि मैं तो घृणित हूँ
मैं तो पाप हूँ इस धरती पर
तो क्यों रोता है तु इस डूब चुकी किश्ती पर
मेरा तो नाम ही जब बदनाम था
मेरे लिए तेरे दिल में बस एक ही पैगाम था
जब मेरी याद आएगी तो रोओगे कभी
ये सोचूँ मैं क्यों पागल?
मैं तो थी एक ऐसी बादल
जो अपनी ही आँखों से बह गयी बन के काजल
अब अपने ही आप पे
अब तो शर्म से रो रही है
मेरी शर्मिन्दगी भी अपने आप पे
हार गयी मैं अब इस जिन्दगी से
कभी-कभी तो हैरान ही हो जाती हूँ
मैं अपने आप पर
रो पड़ती हूँ कभी मैं अपनी ही भावनाओं की लाश पर
अब तो ये कफन ही मेरे पास है
फिर भी न जाने क्यों
जीया मेरा उदास है
जो भी है ये तो मेरा इतिहास था
आगाज मुझे पहले भी था यही
कि अन्जाम मेरा आज होना है यही
क्या करूँ मैं मुझे तो
अपनी ही लाश पे रोना था
क्यों झुठी लाज की बात करूँ मैं
जिसका कि रूप ही अब मेरे पास नहीं है।

कौन हूँ मै क्या हूँ
क्यों सोचे तु मेरे बारे मै
क्या सोच के करना है अब तुझको
हमने तो हर हाल में
खुश ही देखना चाहा है तुझको
अब खुश ही रहना
हर लम्हा हँसते रहना
चाहे मुझपे ताने कसना
पर अब मुझको कोई गम नहीं
अब तो हमें कोई लाज भी नहीं
मैं शर्मिन्दा थी पहले पर अब नहीं
जो दिया सबने वो तुमने भी दिया
तो बोलो इसमें नया क्या हुआ
यहीं सोच के जी लेंगे हम
तेरा नाम ही अपनी जुबां से मिटा देंगें हम
अब यही मेरा काम बाकी रहा
तु नहीं मेरा अब शाकी रहा
प्यासे रह गये मेरे सारे जाम
हम तो पहले से ही हैं बदनाम
ये खुशी मुझे पहली बार मिली
तुमने तो दी है ये एक नयी खुशी
अब तो सोर ही मच रहा सभी दिल में
फिर कौन बचे अब इस महफिल में
हम रहें या न रहें तेरे दिल में
यही लिखकर अफसोस किया
यही लिखकर सन्तोष किया
अपने जी का बोझ कुछ तो कम किया
मत रो अब ऐ मेरे दिल
मैं याद रखूँगी तुम्हें, मैं मानूँगी तुम्हें
तू साफ है, तु सुन्दर है
तू पावन थी तू पावन है
न शर्म पे हैरान हो न अपनी शर्मिन्दगी से

कमीं नहीं तेरी बात में
ये जमीं ही एक धोखा हे तेरे लिए
शर्म नहीं हमें तेरे लिए
खुश होले फिर से एक बार तू।
कोई तो सुन ले
दिल की आवाज ही पुकार तू।
रो मत अब अपनी जिन्दगी पे
तु पहले भी अच्छी थी, तु अब भी अच्छी है
तु कल भी सुन्दर थी, तु आज भी सुन्दर है
तेरा तन मैला नहीं तेरा मन मैला नहीं
तु कल भी पावन थी तु आज भी पावन है
ये सागर है ये सागर है ये पावन नहीं
जो तेर लिए बह गया
तु समाया है जिसमें ये तेरा रूप शृँगार है
यही तेरा इस जमीं पे प्यार है
बाकी कुछ भी नहीं है यहाँ
न सोच अब अपने बारे में
धोखे हैं भरे इस सारे जहाँ में
तुमने कभी ना की धोखाधड़ी
तेरा नाम तो कल भी अमृत ही था
तु आज भी पावन अमृत है
तेरा नाम इतिहास जानेगा
तुम्हें एक दिन जरूर पहचानेगा
फिक्र न कर अपनी ऐसी हस्ती पर
हैरानी कर बस ऐसी बस्ती पर
जिसमें तेरी कोई जगह नहीं
ये जाम नहीं एक जहर है
ये पानी भी एक जहर है
इसको प्यार से पी लेना अपनी प्यास बुझा लेना
जब कभी अफसोस आये
तो खुद पे ही मुस्करा लेना

आज के बाद है कल का जीना
जो भी मीठा खारा मिले उसे पी लेना
यही तेरे लिए अमृत है इस संसार में
आत्मीय रिश्ता मिलता कहाँ है इस बाजार में।